श्री शर्व स्तुतिः (कृष्णार्जुन कृतं)

श्री शर्व स्तुतिः (कृष्णार्जुन कृतं)

कृष्णार्जुनावूचतुः |
नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च |
पशूनां पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने |
महादेवाय भीमाय त्र्यंबकाय च शांतये || 1 ||

ईशानाय भगघ्नाय नमोऽस्त्वंधकघातिने |
कुमारगुरवे तुभ्यं नीलग्रीवाय वेधसे || 2 ||

पिनाकिने हविष्याय सत्याय विभवे सदा |
विलोहिताय धूम्राय व्याधाय नपराजिते || 3 ||

नित्यं नीलशिखंडाय शूलिने दिव्यचक्षुषे |
होत्रे पोत्रे त्रिनेत्राय व्याधये वसुरेतसे || 4 ||

अचिंत्यायांबिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च |
वृषध्वजाय मुंडाय जटिने ब्रह्मचारिणे || 5 ||

तप्यमानाय सलिले ब्रह्मण्यायाजिताय च |
विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते || 6 ||

नमो नमस्ते सेव्याय भूतानां प्रभवे सदा |
ब्रह्मवक्त्राय सर्वाय शंकराय शिवाय च || 7 ||

नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानां पतये नमः |
नमो विश्वस्य पतये महतां पतये नमः || 8 ||

नमः सहस्रशिरसे सहस्रभुजमन्यवे |
सहस्रनेत्रपादाय नमोऽसंख्येयकर्मणे || 9 ||

नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च |
भक्तानुकंपिने नित्यं सिद्ध्यतां नो वरः प्रभो || 10 ||

इति श्रीमन्महाभारते द्रोणपर्वणि अर्जुनस्वप्नदर्शने अशीतितमोऽध्याये शर्व स्तुतिः ||